

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-०७

दिनांक- मंगलवार, २४ जनवरी, २०२३



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 22.2 एवं 8.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 95 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 55 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.4 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.7 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 9.8 एवं दोपहर में 24.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(25-29 जनवरी, 2023)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 25-29 जनवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं तथा इस अवधि में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 24 से 27 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- इस पूर्वानुमानित अवधि में लगातार पछिया हवा 3 से 5 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए कृषक भाईयों को सलाह दी जाती है कि अगात प्रभेद की तैयार फसलों जैसे हल्दी, ओल एवं आलू की खुदाई करें।
- मक्का की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सिंचाई के बाद 25-30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषण करें।
- समय से बोयी गई गेहूँ की 40 से 50 दिनों की फसल में दूसरी सिंचाई एवं अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो 60 से 65 दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई के लिए इंतजार कर सकते हैं।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम यूरिया को 500 लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रूप से निगरानी करें। यह सूक्ष्म आकार का कीट पौधों के सभी मुलायम भागों-तने व फलीयों का रस चुसते हैं। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते हैं, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते हैं। फलीयों कम लगती हैं तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमैथोएट 30 ई०सी० दवा का 1.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानों को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियों खाने योग्य नहीं रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15-20 टी आकार का पंछी बैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टेयर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई० सी० या नोवाव्युरॉन 10 ई० सी० का 1 मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन ईख की रोपाई के लिए मौसम अनुकूल हो रहा है। रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की तैयारी के वक्त जुताई में 15-20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2.5 से 3 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में 2 प्रतिषत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रूप से निगरानी करते रहें।
- गरमा मौसम की अगात सब्जियों जैसे-भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी-गली गोबर खाद का प्रबंध करें। 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर मिला दें। यह खाद भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20-30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे-छोटे उग रहे पौधों पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।

आज का अधिकतम तापमान: 24.2 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 0.8 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)

तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

आज का न्यूनतम तापमान: 10.6 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 2.8 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)

वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)